पी. एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय कारवार

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA KARWAR

ಪಿ. ಎಂ. ಶ್ರೀ ಕೇಂದ್ರೀಯ ವಿದ್ಯಾಲಯ ಕಾರವಾರ

वसुधा विद्यालय ई -पत्रिका 2024 - 2025

पी० एम० श्री केन्द्रीय विद्यालय कारवार

केन्द्रीय विद्यालय नेवल बेस कारवार, कारवार, उत्तर कन्नड़

पिन कोड 581308

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

ई–पत्रिका सम्पादकीय समिति

स्टाफ के सदस्यों को / STAFF MEMBERS			
1	श्री डॉ. भंडारी /MR. DR BHANDARI	पीजीटी-अंग्रेजी /PGT-ENGLISH	आई/सी I/C
2	श्रीमती रीना यादव / MRS. Reena Yadav	पीजीटी-भौतिकी / PGT-PHYSIC	सीओ – आई/सी CO – I/C
3	श्री अशोक कुमार / MR. ASHOK KUMAR	प्राचार्य / PRINCIPAL	सदस्य /MEMBER
4	श्रीमती शालिनी के.जी. /SHALINI KG	पीजीटी जीवविज्ञान / PGT BIOLOGY	सदस्य /MEMBER
5	श्री हरि मोहन मीना MR. HARI MOHAN MEENA	पीजीटी हिंदी /PGT HINDI	सदस्य /MEMBER
6	श्रीमती अक्षता के ई / AKSHATA KE	पीजीटी रसायन विज्ञान /PGT CHEMISTARY	सदस्य /MEMBER
7	श्री अमरचंद वर्मा MR. AMRCHAND VERMA	टीजीटी सामाजिक विज्ञान / TGT SOCIAL SEINECE	सदस्य /MEMBER
8	श्रीमती कंचन वर्मा /MRS. KANCHAN VERMA	पीजीटी गणित / PGT MATHS	सदस्य /MEMBER
9	श्री शिवम शुक्ला / MR. SHIVAM SHUKLA	टीजीटी कला / TGT ARTS	सदस्य /MEMBER

10	श्री अमोल पोंडित /MR AMOL POANDIT	PRT/ पीआरटी	सदस्य /MEMBER
11	श्री टी. राम कृष्ण / MR. T. RAM KRISHNA	PRT/ पीआरटी	सदस्य /MEMBER

अनुक्रमाणिका

INDEX

क्रम स. SL.NO	विषय TITLE	पृष्ठ स. PAGE NO.
1.	परामर्शदाता Consultant	5
2.	आयुक्त महोदया की तरफ से संदेश Message from the Commissioner	6
3.	उपायुक्त महोदय की तरफ से संदेश Message from the Deputy Commissioner	7
4.	सहायक आयुक्त महोदया की तरफ से संदेश Message from the Assistant Commissioner	8
5.	प्राचार्य की कलम से..... From the pen of the Principal	9
6.	हिंदी विभाग Hindi Section	10 - 33
7.	अंग्रेजी विभाग English Section	34 - 40
8.	कला विभाग Art Section	41 - 45
9.	चित्र संकलन Photo Gallery	46- 55

परामर्शदाता

श्रीमती निधि पांडे
आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

श्री धर्मेंद्र पटले
उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, बेंगलुरु संभाग

श्रीमती हेमा के
सहायक आयुक्त
क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु संभाग

श्री बंशी लाल
प्रभारी प्राचार्य
पी.एम.श्री केन्द्रीय विद्यालय विजयपुर

आयुक्त महोदया की तरफ से
संदेश

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के स्थापना दिवस 2023 के इस अवसर पर सभी शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों और अभिभावकों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

1963 में प्रारंभ हुआ यह सफर अब अपने 60वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस लंबे सफर में केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने शिक्षा के क्षेत्र में देश के अंदर अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है और आज केन्द्रीय विद्यालयों की गिनती एक उत्कृष्ट संस्थान के रूप में होती है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के कंधों पर 1256 केंद्रीय विद्यालयों में पढ़ रहे 14.5 लाख से अधिक विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने सदैव अपने विद्यार्थियों के समग्र विकास को केन्द्र में रखकर उनमें भारतीयता की भावना को प्रेरित करने की दिशा में कार्य किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विभिन्न पहलुओं को स्कूली शिक्षा में लागू करने में भी केन्द्रीय विद्यालय संगठन अग्रणी भूमिका निभा रहा है। शिक्षा के अनेक मानदण्डों पर खरा उतरने के लिए केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षक निरंतर अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। अतः मैं केन्द्रीय विद्यालय संगठन के इस स्वरूप को गढ़ने के लिए अपने वर्तमान और पूर्व शिक्षकों को विशेष रूप से हार्दिक बधाई प्रेषित करती हूँ।

मुझे दृढ़ विश्वास है कि सेवा और समर्पण का यह सफर अनवरत जारी रहेगा।
शुभकामनाओं सहित

श्रीमती निधि पांडे

आयुक्त

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

उपायुक्त महोदय की तरफ से
संदेश

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्रोति धनात् धर्मं ततः सुखम्।।

ज्ञान विनम्रता देता है, विनम्रता से पात्रता, पात्रता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख मिलता है।

शिक्षा मनुष्य की वह नींव है जिस पर मनुष्य के भविष्य का निर्माण होता है। केंद्रीय विद्यालय संगठन शिक्षा के प्रति अपने निरंतर प्रयासों से भारत में ज्ञान की लौ जलाने का सार्थक प्रयास कर रहा है। इस संगठन के मेरे सभी वरिष्ठ अधिकारी, सहकर्मी, शिक्षक एवं कर्मचारी पूरे समर्पण भाव से शिक्षा को प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास कर रहे हैं।

मैं उन सभी छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। जो केंद्रीय विद्यालय संगठन के शिक्षण वातावरण में अपना भविष्य बना रहे हैं।

धन्यवाद।

श्री धर्मेंद्र पटले

उपायुक्त

केन्द्रीय विद्यालय संगठन बेंगलुरु संभाग

सहायक आयुक्त महोदया की तरफ से

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि पी. एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय विजयपुर अपनी वार्षिक ई-पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। विद्यालय की राजभाषा हिन्दी पत्रिका अभिव्यक्ति का मंच है। इस साहित्यिक मंच के माध्यम से विद्यार्थियों की सुप्त लेखन शैली को उजागर होने का अवसर मिलता है ।

यह पत्रिका एक दर्पण भी है, जिसके माध्यम से विद्यालय की समस्त गतिविधियाँ प्रतिबिंबित होती हैं। मुझे आशा है कि विद्यालय ई-पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल होगी।

मैं विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकगण एवं कर्मचारियों को विद्यालय ई-पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ ।

श्रीमती हेमा के

सहायक आयुक्त

क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु संभाग

प्राचार्य की कलम से.....

शिक्षा का मतलब केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करना ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को जीवन में सफल होने के लिए तैयार करना भी है। हर किसी के जीवन का सबसे कीमती रत्न चरित्र होता है। यह केवल विद्यालयों में ही संभव है। प्रत्येक बच्चे में निहित रचनात्मक भावना का पोषण करना हमारी जिम्मेदारी है। यह बताते हुये अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि पी० एम० श्री केन्द्रीय विद्यालय कारवार अपना वसुधा विद्यालय ई-पत्रिका प्रकाशन कर रहा है। विद्यालय द्वारा प्रकाशित वसुधा विद्यालय ई -पत्रिका विद्यालय के प्रगति एवं शैक्षिक उन्नयन के स्तर पर ज्ञान प्राप्त कराता है| यह पत्रिका ना केवल विद्यालय में हो रहे पठन -पाठन एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अवलोकन कराएगी अपितु विद्यार्थीओं के सृजनात्मक लेखन एवं संपादन जैसे क्षमताओं को सवारने का अवसर प्रदान करेगी | अपेक्षा है कि प्रकाशित होने पर यह पत्रिका ज्ञानवर्धन और रोचक सामग्री से परिपुर्ण होगी | इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मै अपने विद्यालय के सभी छात्रों तथा सभी शिक्षको को हार्दिक शुभकामनाये देता हूँ |

श्री अशोक कुमार

प्रभारी प्राचार्य

हिंदी विभाग

2024 – 25

हम बच्चे

बचपन में हम गाते और हंसते थे। हम आगे बढ़ना नहीं छोड़ते।
हम रास्ते में पड़े काँटों और पत्थरों को हटाते हैं।
चाहे हम कितनी भी चुनौतियों का सामना करें, हम कभी हार नहीं मानते।
जैसे-जैसे हम समृद्धि से ऊपर उठते हैं, हम सपनों के महल बनाते हैं।
हम साथ मिलकर मुस्कुराते और हँसते हैं, पूरी दुनिया में खुशियाँ फैलाते हैं।
हम खुद को भारतीय कहते हैं, दुनिया के सबसे अच्छे लोग।

6 'बी'

निधि

मैं भी स्कूल में जाऊँगा

माँ, कृपया मेरा बैग ले आओ। मैं भी स्कूल जा रहा हूँ। मैं ए, बी, सी और डी पढ़ूँगा। मैं का खा गा भी पढ़ूँगा। पढ़ाई खत्म होने के बाद, मैं वापस आऊँगा, नई चीजें खोजूँगा और सबको बताऊँगा।

पढ़ लिख कर इक दिन मैं भी
नाम बहुत ही कमाऊँगा
होगा गर्व तुझे उस दिन
जब देश के काम, मैं आऊँगा,
कलाम, भगत सिंह जैसा बन कर
इस जग में मैं छा जाऊँगा,
मम्मी मुझको बस्ता ले दो
मैं भी स्कूल में जाऊँगा, ।

7 'बी'

बांसुरी वाला

बात सात सौ साल पुरानी सुनो ध्यान से प्यारे हैम्लिन नामक एक शहर था वीजर नदी किनारे।
यूं तो शहर बहुत सुन्दर था हैम्लिन जिसका नाम मगर वहां के लोगों का हो गया था चैन हराम।
इतने चूहे इतने चूहे गिनती हो गई मुश्किल जिधर भी देखो जहां भी देखो करते दिखते किल बिल।
बाहर चूहे घर में चूहे दरवाजे और दर में चूहे खिड़की और आलों में चूहे थालों और प्यालों में चूहे। ट्रंक में और संदूक में चूहे फौजी की बंदूक में चूहे अफसर की गाड़ी में चूहे नौकर की दाढ़ी में चूहे। पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण जिधर भी देखो चूहे ऊपर नीचे आगे पीछे जिधर भी देखो चूहे। दुबले चूहे मोटे चूहे लंबे चूहे छोटे चूहे काले चूहे गोरो चूहे भूखे और चटोरो चूहे।चूहे भी वो ऐसे चूहे बिल्ली को खा जाए चीले जान बचाएं। चूहो से घबराकर राजा ने किया ऐलान जो उनसे पीछा छुटवाये पाये ढ़ेर ईनाम। सुनकर ये ऐलान वहां पर पहुंचा एक मदारी मस्त कलंदर नाम था उसका मुंह पर लंबी दाढ़ी। झोले से बंसी निकालकर मीठी तान बजाई जिसको सुनकर चूहा सेना दौड़ी दौड़ी आई।कोनों खुदरों से निकले और निकले महल अतारी से नाले नाली से निकले और निकले बक्सपिटारी से। घर की चौखट को फलांगकर आये ढेरों चूहें छत के ऊपर से छलांग कर आये ढ़ेरों चूहे। लाखों चूहों का जलूस चल पड़ा मदारी के पीछे जैसे कोई डोरी उनको लिये जा रही हो खींचे। आगे आगे चला मदारी पीछो चूहे सारे चलते चलते वो जा पहुंचे वीज़र नदी किनारे। वहां पहुंच कर भी ना ठहरा वो छह फुटा मदारी उतर गया दरिया के अन्दर पीछे पलटन सारी। ले गया मदारी सब चूहों को वीज़र नदी के अंदर एक भी जिंदा नहीं बचा सब डूबे नदी के अन्दर।चूहों को यूं मार मदारी राजा के घर आया अपने इनाम का वादा उसको फौरन याद दिलाया। राजा बोलाः क्या कहते हो मिस्टर मस्त कलंदर चूहे तो खुद ही जा डूबे वीज़र के अन्दर।

10 'अ'

माँ

मैं जब अकेला रहा तब उसकी याद आयी,

अँधेर में था तो उसकी याद आयी।

जब भूख लगी तो उसकी याद आयी।

नींद नहीं आयी तो उसकी याद आयी।

सोचने में कितनी आसान लगती थी

ये विहंगी से जीना सीखा तो उसकी याद आयी।

तभी भी लगा की माँ इतनी प्यारी कैसे हो सकती है

हमसे भीं ज्यादा- हमारे लिए कैसे इतना कर सकती हैं

लेकिन सच तो ये है की वो माँ - ही होती है

कोमल मीना

7 'बी'

नाना जी

नाना जी, ओ ना जी,
कल फिर आना नाना जी!
बड़ी भली लगती कानों को
अजी छड़ी की ठक-ठक-ठक,
और सुहाने किस्से जिनमें
परियाँ, बौनों की बक-झक।
बुन ना पाता कोई ऐसा

ताना-बाना नाना जी!

खूब झकाझक उजली टोपी
लगती कितनी प्यारी है,
ढीला कुर्ता, काली अचकन
मन जिस पर बलिहारी है।
नानी कहती-बचा यही एक
चाव पुराना, नाना जी!

रोती छुटकी खिल-खिल हँसती
जब चुटकुले सुनाते आप,
हँसकर उसे चिढ़ाते आप
खुद ही मगर मनाते आप।
कोई सीखे अजी, आपसे,
बात बनाना, नाना जी!

सांताक्लाज दंग रह जाए
ऐसे हैं उपहार आपके,
सरपट-सरपट बढ़ते जाते
किस्से अपरंपार आपके।
सच बतलाओ, मिला कहीं से,
छिपा खजाना नाना जी!

नाना जी, ओ नाना जी,
कल फिर आना नाना जी!

मनस्वी वी
10 'अ'

नटखट बच्चे

हम है बच्चे,
हे हम थोडे-से कच्चे।
बोलने में हम सच्चे,
लोग मानते हमे पक्के।
पानी में हम खेलते है,
धूप में भी हम खेलते है।
तंग आकर माँ-बाप डाँटते है,
पर हमे न किसी-का फिखर है।
खेलना हमारा जिवन,
शरारत ही हमारा कर्म।
भोले-भाले है हम यार,
तंग करने-से होता है प्यार।
आपस में हम मिलकर रहते,
खेलते-कुदते हँसते-हँसते।
जब कोई हमे डराते,

तब हम जोर-जोर से रोते।

सुधा रानी हरिजन

10 'ब'

भालू दादा

पहन लिया क्या नया लबादा,
काले-काले भालू दादा?
ठुमक-ठुमककर पाँव बढ़ाते
खूब झटककर लंबे बाल,
दिखा रहे हैं कितनी बढ़िया
लाला झुमरूमल की चाल।
फिल्मी अभिनय जब दिखलाते,
गर्दन तब मटकाते ज्यादा!
कभी-कभी टीचर बन जाते
खूब बड़ा-सा लेकर डंडा,

हँसकर नमस्कार कर दो तो
सारा गुस्सा होता ठंडा।
घेरे खड़े अभी तक बच्चे-
फिर आओगे, पक्का वादा?

नंदिनी गौनाली

10 'ब'

पापा, दीदी बहुत बुरी है

पापा दीदी बहुत बुरी है!
बिना बात करती है कुट्टी
सीधे मुँह न करती बात,
मैं कहता हूँ-खेलो मिलकर
मगर चला देती यह लात।
हरदम झल्लाया करती है,
हरदम इसकी नाक चढ़ी है!

मेरे सभी खिलौने लेकर
जिस-तिस को दिखलाया करती,
माँगूँ तो कह देती ना-ना,
मुझ पर रोब जताया करती।
सब दिन कहती-पढ़ो-पढ़ो, बस
आफत मेरे गले पड़ी है!

कभी न अपनी चिज्जी देती
उलटे मेरी हँसी उड़ाती,
कह देती है सब सखियों से
बुद्धू कहकर मुझे चिढ़ाती।
बातें करती मीठी-मीठी
पर भीतर से तेज छुरी है!

रामकृष्णा गगनमाले
10 'बी'

मेले में देखी एक गुड़िया

टोप लगाए गुड्डा देखा,
ढाई मन की धोबन देखी
हा-हा हँसता बुड्ढा देखा।
बड़ी भीड़ थी, धक्कम-धक्का,
झंझट और झमेला देखा!

गरम इमरती खूब उड़ाईं
जी भर करके लड्डू खाए,
फिर दौड़े झटपट अनार के
चूरन की एक पुड़िया लाए।
घुँघरू बाँधे ठुन-ठुन करता,
जलजीरे का ठेला देखा

मोटे हाथी पर बैठे थे

एक मोटे-ताजे लाला जी,
हँसकर बोले-आओ-आओ,
कुक्कू ने तो बस, टाला जी।
शीशमहल में नाटी-तिरछी,
शक्लों का एक रेला देखा।

एक जगह बंदूक और थे
टँगे हुए ढेरों गुब्बारे,
कुक्कू जी ने लगा निशाना
फोड़ दिए सारे के सारे।
ले इाम आए दंगल में-
किंगकौंग का चेला देखा।

10 'ब'

तुम सुनो तो सही...

ये पर्वत ये सागर एक संदेश देते हैं, तुम सुनो तो सही। पर्वत
कहता है उठो, ऊपर उठो लक्ष्य की ओर बढ़ो, तुम बढ़ो तो सही। सागर कहता है
जीवन के उतार चढ़ाव से डरकर मत जिओ, तुम जिओ तो सही।
ये पर्वत ये सागर एक संदेश देते हैं, तुम सुनो तो सही।

ये वृक्ष ये हवाएँ एक संदेश देते हैं, तुम सुनो तो सही। वृक्ष कहता
है तुम फल से पूर्ण होकर झुक जाओ, तुम झुको तो सही। हवाएँ कहती हैं तुम
सबको स्वतंत्र वातावरण में साँस लेने दो, तुम साँस लेने दो तो सही। ये
वृक्ष ये हवाएँ एक संदेश देते हैं, तुम सुनो तो सही।

ये पशु-पक्षी ये खेत-खलिहान कुछ कहते हैं, तुम सुनो तो सही। पशु-
पक्षी कहते हैं कि तुम निःस्वार्थ भाव से चहचहाओ, तुम चहचहाओ तो सही।
खेत-खलिहान कहते हैं अपनी हरियाली मिटा दो परपोषण के लिए, तुम मिटाओ तो सही।
ये पशु-पक्षी ये खेत-खलिहान कुछ कहते हैं, तुम सुनो तो सही।

विवेकानंद और गाँधीजी एक संदेश देते हैं, तुम सुनो तो सही। विवेकानंद
कहते हैं तुम अस्पृश्यता के भेदभाव को दूर करो, दूर करो तो सही। गाँधी जी कहते हैं
तुम अहिंसा के मार्ग पर चलकर देश का कल्याण करो, करो तो सही।
विवेकानंद और गाँधीजी एक संदेश देते हैं, तुम सुनो तो सही।

स्मृति में लोग

आज यादों के गलियारों का एक चक्कर लगा आए,
कुछ भूले-बिसरे लोगों को याद कर तृप्त हुए तो थोड़ा मुस्कुराए।

कुछ ऐसे थे जिन्होंने किया मन को आहत,
तो किसी के चंद शब्दों ने दी टूटे मन को राहत,
कुछ ने एहसास दिलाया हम किसी काबिल नहीं,
तो किसी ने विश्वास दिलाया हम हैं नायाब,
समझना हमें हर किसी के बस की नहीं।

तो किसी ने देखी सिर्फ ख़ामियाँ,
तो किसी ने गिनवाई हमें हमारी खूबियाँ।

किसी के शब्दों ने दिए मन को कभी न भरने वाले घाव,
तो किसी के विश्वास ने किया मन में नवीन उर्जा का संचार।

किसी को याद कर दिल के उद्वेग तरंगित हो गए,
तो किसी की याद में मन के तार झंकृत हो गए।

शुक्रिया दोनों का कि एक ने पहचान करवाई ख़ामियों की गहराई की,
तो एक ने आईना दिखाया मुझमें मौज़ूद संभावनाओं की ऊँचाई की।

मेरी ज़िंदगी में आए मेरे शुभचिंतकों का आभार,
उनका विश्वास और हौसला है मेरी प्रगति का आधार।

शुक्रिया उनका भी जिन्होंने समझा मुझे तुच्छ,
और उद्वेलित किया मुझे बनने को बेहतर,
दोनों ने किया गतिमान मुझे प्रगति के पथ पर।

जोकर

सबका मन बहलाता जोकर,
हँसता और हँसाता जोकर।
झूम-झामकर यह आता है,
नए करिश्मे दिखलाता है।

उछल बाँस पर चढ़ जाता है,
हाथ छोड़कर लहराता है।
सिर के बल यह चल सकता है,
आग हाथ पर मल सकता है।

जलती हुई आग की लपटें,
उछल, पार करता यह झट से।
अगले पल फिर हल्ला-गुल्ला,
गाल फुलाता ज्यों रसगुल्ला।

ढीला-ढाला खूब पजामा
लगता है यह सचमुच गामा।
फुलझड़ियों-सी हैं मुसकानें,
फूलों-जैसे इसके गाने।

हरदम हँसता यह मस्ताना,
खुशियों का है भरा खजाना!

ज़िंदगीनामा

ए समय! मैं कहाँ आ गई ?
सबसे इतनी दूर कैसे बस गई ?
दक्षिण के नगर में,
खुले आसमान के डगर में,
मानों, किसी की तलाश में.....
तब एक स्वर गूँजा,
आओ, इन ख़ामोशियों में खो जाओ,

शिखर के आगोश में सो जाओ,
खेतों की हरियाली में जीवन खोजो,
रंग-बिरंगे फूलों में एक हो जाओ ...
मैं चल पड़ी उस आवाज की दिशा में ....
दूर दक्षिण के सुंदर वनों के हृदय में,
मैंने जाना और पहचाना उस आवाज को,
मेघों के बीच, नन्हे बच्चों के बीच,
जिंदगी पुकार रही है ....हाँ !!!
मैं आ रही हूँ, मैं आ रही हूँ |

क्षमा करो धरती

क्षमा करो धरती मुझे,
मैं तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकता,
सोचता हूँ हर दिन मैं तुम्हारी रक्षा करूँ।
क्या करूँ मेरी माँ,
मैं जुड़ चुका हूँ,
अपने और अपनों के बारे में।
क्षमा करो मुझे,
क्योंकि समय नहीं है मेरे पास।
देश और दुनिया के विकास में,
भूल चुका हूँ मैं माँ की मर्यादा,
पता नहीं है क्यों मैं दौड़ रहा हूँ,
अपनी ज़िंदगी बनाने में।
क्षमा करो मेरी माँ,
मैं भूल चुका हूँ कि,
मैं आपका ही आविष्कार हूँ।
क्षमा करो मेरी माँ अब मैं,
वो गलती नहीं करूँगा कि जिससे तुमको नुक़सान पहुँचे,

पता चला है अब तुम्हारे बिना,
कुछ भी नहीं होगा।
क्षमा करो मेरी सारी गलती को मानकर।
क्षमा करो मुझे सारी गलती मानकर।

देश-प्रेम

हम भारत माँ के प्यारे हैं,
उसके राज दुलारे हैं
हम तन-मन उस पर वारे हैं,
विश्वास मनों में धारे हैं।

इरादे हमारे अब नेक हैं,
हम अनेक हैं लेकिन एक हैं,
संकल्प हमारा संवेक है,
देश-प्रेम में अन्वेत है।

जिसने माँ के चमन उजाड़े हैं,
हम उसको अब ताड़े हैं,
सब हाथ मिलाकर जोड़े हैं,
अलगाव के बंधन तोड़े हैं।

ऐसे संकल्प हमारे न्यारे हैं,
हम भारत माँ के प्यारे हैं।

हाँ, मैं नारी हूँ

हाँ, मैं नारी हूँ, मैं आज की नारी हूँ।
मैं नहीं डरती जीवन के संघर्षो से।
जीवन में आने वाली विषम परिस्थितियों से।
हाँ, मैं नारी हूँ, मैं आज की नारी हूँ ।

अब नहीं होगा बालविवाह जैसा अपराध ।
ना ही कोई दुराचार, दहेज प्रथा को लेकर
कोई उत्पीड़न अब नहीं सहूँगी
हाँ,मैं नारी हूँ,आज की नारी हूँ।

कर्तव्य हो चाहे पारिवारिक, व्यवसायिक
हर किरदार को भलीभांति निभाऊँगी
जीवन को परहित अपित कर सार्थक बनाऊँगी
हाँ, मै नारी हूँ, मैं आज की नारी हूँ।

नही इच्छा हीरे मोती की अपने हिस्से के सम्मान
की अधिकारिणी हूँ, करो विश्वास अगर अंतरिक्ष तक पहुँच
अपने देश को आगे बढ़ाने वाली हूँ।
हाँ, मैं नारी हूँ, मैं आज की नारी हूँ|

गुरु की महिमा

गुरु ज्ञान अनमोल ख़ज़ाना, जो इसको अपनाएगा,
जीवन धन्य उसी का होगा, सुख-समृद्धि पाएगा।
गुरु ज्ञान अनमोल ख़ज़ाना,जो इसको अपनाएगा।

विधि-विचार व ज्ञान मिलेगा, प्यार भरा अनुराग मिलेगा,
गुरु ज्ञान अनमोल ख़ज़ाना, जो इसको अपनाएगा।

करो ग्रहण गुरु ज्ञान, बिगड़ा सब बन जाएगा,
गुरु ज्ञान अनमोल ख़ज़ाना, जो इसको अपनाएगा।

जीवन के हर मोड़ पर, अपना नाम कमायेगा,
गुरुज्ञान अनमोल ख़ज़ाना, जो इसको अपनाएगा।

ना हक़ मेरा ना हक़ तेरा, गुरु तो सब बतलाएगा,
गुरु ज्ञान अनमोल ख़ज़ाना, जो इसको अपनाएगा।

जो सुनता सुविचार गुरु का, वो आगे बढ़ जाएगा,
गुरु ज्ञान अनमोल ख़ज़ाना, जो इसको अपनाएगा ।

खुद की तलाश कर पाना मुश्किल है...

खुद की तलाश कर पाना मुश्किल है,
खुद से ही बात कर पाना मुश्किल है।
खुद से ही सवाल पूछती हूं मैं,

खुद को जवाब दे पाना मुश्किल है ।

कहाँ हैं, क्यों हैं, कुछ जवाब नहीं,
अपनी ख्वाहिशों का कहीं कुछ हिसाब नहीं।
दुनिया के इशारों पर चलते चले गए,
क्या थे ज़ज्बात मेरे उसकी तो कहीं बात नहीं ।

बिन पानी मछली का जीवन क्या होगा
बिन श्रोता के रागी का गायन क्या होगा ?
बंद पिंजरों में सिंहों का गर्जन क्या होगा,
बिन अपनों के ऐश्वर्यों का साधन क्या होगा?

जवाब, सवाल में ही निहित होता है,
सुख, दुख से ही फलित होता है ।
दूरी बढने पर प्रेम और बढ़ता है,
संघर्षों से ही जीवन का रंग चढ़ता है ।

जब समुंदर हो तो कूपों की बात क्या करना,
जो है अंदर ही उसकी तलाश क्या करना!
जो दूर होकर भी रहे हर घड़ी निगाहों में,

उससे दूरी की बात क्या करना !

सुखी बंजर धरती पर जब रिमझिम बुँदे पड़ती है

सुखी बंजर धरती पर जब रिमझिम बुँदे पड़ती है,
सोंधी खुसबू के संग ही खुछ उमीदे भी पलती है|

निष्क्रिय ,बेकार उपेक्षित लावारिस सी गुठली पर ,
बारिश की एक बूंद छिटकर अमृत जैसी पड़ती है|
उस एक बूंद क बुलबुले पर आ जाता उसमे विश्वास ,
फाड़ क धरती के सीने को जग जाती जीने की आस|

धीरे धीरे अंकुर से वह वर्क्ष बड़ा बन जाता है ,
फल ,छाया और हवा के संग ही सन्देशा दे जाता है |
हार न मानो इस जीवन मे कई सहारे होते है ,
अनवरत सघर्ष करो तुम कई रास्ते मिलते है |

द्रेध विस्वास अटल हो तो कुछ भी हासिल कर सकते हो,
पंख भले कमजोर हो फिर भी ,होसलो से उड़ सकते हो |
वादा करो ये खुद से खुद का,थक कर नहीं बेठना है ,
कितनो की ताकत तुमसे है उनकी हिम्मत बनना है |

बेपरवाह

बड़े दिनों से लगी हुई थी तलव दिलों पे छाने की,
लो हमने कर दी गुस्ताख़ी फिर बच्चा बन जाने की ।

ख़ुद की नज़रों में इज्जत हो, ख़ुद को ख़ुद की खबर रहे,
हमें नहीं है कोई तमन्ना अख़बारों में आने की।

आग लगा दी रस्तों पे कि शायद हम रुक जाएँगे,
मतलब उनको पता नहीं है फ़ितरत एक परवाने की।

चंद लम्हों के तो मेहमां हैं, औरों से हमको क्या लेना,
मेरे बग़ल में बैठो गर, ना बातें करो ज़माने की।

आत्मपरिचय

मैं ऐसी नहीं हूँ, जैसी नज़र आती हूँ।
देखने में भले ही लगे एटीट्यूड है,
लेकिन एक बार कंफ़रटेबल होने के बाद बच्ची बन जाती हूँ।
बोलती बहुत हूँ मैं,
और बोलते बोलते कभी,
बहुत बोल जाती हूँ ।
जो बातें नहीं बतानी होती हैं,
अक्सर वो भी बता देती हूँ।
मतलब की इस दुनिया में,
रिश्ते दिल से निभाती हूँ।
बड़ी-बड़ी बातों को भी नजरअंदाज
और छोटी-छोटी बातों पर रो जाती हूँ।
बहुत जल्दी किसी से भी अटैच
हो जाना सबसे बुरी आदत हैं मेरी।

आज के ज़माने में बच्चे भी बच्चे नहीं रहे,

मगर मैं हमेशा अपने बचपने को ज़िंदा रखना चाहती हूँ,
मैं झल्ली बनकर जीना चाहती हूँ।

न्याय-पुष्प

जब-जब पाप बढ़ेगा भू पर,
अधर्म का ताप चढ़ेगा ऊपर,
हरि आयेंगे धरती के ऊपर,
नाश अन्याय का हो जाएगा,
सत्य का दीपक जल जाएगा।

एक दिन ऐसा आएगा,
पाप-कुआँ भर जाएगा,
अधर्म करने वाला पछताएगा,
गिर कर मुँह की खाएगा।
फिर हर व्यक्ति सुख पाएगा,श्रीमां
न्याय-पुष्प खिल जाएगा।

अंकों का महत्व

बचपन से ही मुझे गणित पसंद था। इसने मुझे पर्यवेक्षक बनना और जीवन की समस्याओं को संभालना सिखाया। गणित केवल एक विषय ही नहीं है, यह अन्य विषयों को भी प्रेरित करता है। गणित चारों ओर के पैटर्न का अवलोकन करने के बारे में है।

यह पैटर्न का अध्ययन है। प्रकृति में हर चीज़ पैटर्न का पालन करती है, चाहे वह पत्तियाँ या पेड़ या नदियाँ, पहाड़, चट्टानें, परमाणु, अणु, समय, घूर्णन और ग्रहों की क्रांति हो या यहां तक कि हम, मनुष्य पैटर्न का पालन करते हैं।

यह सीखने के लिए सबसे आसान विषय है। हमें केवल गणित की समस्याओं में पैटर्न को समझना है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो लिखना-पढ़ना नहीं जानते, लेकिन वे आसानी से अपनी चीजें बाजार में बेच सकते हैं क्योंकि वे अपनी चीजें बेचने का पैटर्न सीखते हैं; उदाहरण के लिए, एक सब्जी विक्रेता भले ही गणित नहीं जानता हो, वह पैटर्न सीखता है जैसे कि 1 किलो की लागत या 2 किलो का मतलब एक ही चीज दो बार और इसी तरह वह अपनी गणना में कभी गलती नहीं करेगा।

आइए गणित के कुछ दिलचस्प पैटर्न देखें।

1. एक संख्या के बारे में सोचें, उसमें दो जोड़ें, फिर उसमें 3 जोड़ें, फिर उसमें से अपनी संख्या घटाएं, उत्तर हमेशा 5 होगा।

2. कोई भी 3 या 4 अंकों वाली संख्या लें, अंकों को उलट दें और फिर इन दोनों संख्याओं को घटा दें, परिणाम हमेशा 3 का गुणज होगा।

3. यदि हम छह अंकों की संख्या बनाने के लिए तीन अंकों की संख्या को दो बार दोहराते हैं तो परिणाम 7, 11, 13 से विभाज्य होगा।

1. 1234579 X 9 = 111111111

1234579 X 18 = 222222222

12345679 X 27 = 333333333

1234579 X 3 6 = 444444444

….. और इसी तरह

2. 9 X 2 =18

99 X 2 =198

999 X 2 = 1998

9999 X 2 = 19998

99999 X 2 = 199998

…… और इसी तरह

3. $1^3 + 5^3 + 3^3 = 153$

$16^3 + 50^3 + 33^3 = 165033$

$166^3 + 500^3 + 333^3 = 16500333$

$1666^3 + 5000^3 + 3333^3 = 166650003333$

…… और इसी तरह और भी कई पैटर्न हैं।

इसलिए प्रत्येक पैटर्न के पीछे की युक्ति सीखें और फिर आप सभी गणित का आनंद ले सकेंगे।

ENGLISH SECTION 2024 -25

Kendriya Vidyalaya : A Writer's Perspective

The texts are our trusty guides,
Pages filled with facts and prides,
We sink in them like a sponge so bright ,
There our mind takes the first flight.

The friends we make, the memories we keep,
In KV Vijayapura's sacred sleep.
The lessons we learn, the growth we make,
Will remain with us forever awake.

So here we stay in the school of dreams,
Where knowledge and wisdom are the themes.
And then when we depart, we carry with us,
The memories of our Vidyalaya bliss.

12 'A'

EXAMS

Exams are like festivals for students,
Celebrate it with your friends.

Exams are a pleasure,
Not a pressure.

Students are like exam warriors,
They have to fight stress barriers.

In exam, to do your best,
You should take adequate rest.

Of course! Exams are stressful,
But only to make you successful.

Good luck ! exam warriors!!

10 ‘A’

Digital Era

In our hands, a glowing screen,

A portal to worlds unseen.

With each tap and swipe we roam,

Through realms of data, a digital home.

Messages fly with lightning speed,

Connecting hearts with the words we need.

Apps and games, a boundless array,

Entertainment at our fingertips, night and day.

Yet amidst the buzz of virtual delight,

Let's not forget the world in sight.

For beyond the screen & its captivating gleam,

Lies the beauty of life & it's tangible dream.

7 'B'

Clean it , Clean it

It's your day to
Clean your home & school
Enjoy your cleaning
Enjoy your cleaning

Clean it , clean it
It's your day to
Wash your hands & nails
Enjoy your cleaning
Enjoy your cleaning

Clean it , clean it
It's your time to
Clean our country
Enjoy your cleaning
Enjoy your cleaning

Clean it , clean it
It's your duty to
Make our India neat & clean
Enjoy your cleaning
Enjoy your cleaning

"Clean India
Green India"

7 ‘B’

Paradise on Earth

What is the need of today?
World peace is the need of today.
Why is there no peace in our world?
All this because of the boundaries of caste, creed and colour.

Turn the pages of history,
You will see the chemistry of world war,
People's bloodshed and screams,
There is violence everywhere.

Man has become closer to the stars,
And away from your neighbors.
Love others as you love yourself.
To love is an art and to be loved is a gift.

Let the world we live in become a better place.
live in harmony with each other,
Then Almighty God will shower blessings of peace and happiness,
Then God will say "If there is heaven on earth. It's right here, it's right here."

Who am I?

I am here, I am there,

I am everywhere,

I am in the pattern of blooming flowers,

I am in the rhythm of flowing water,

I'm in the clock ticking,

I am in nature,

I am more than just numbers,

A pattern, a shape and what not?

It will be a lot of fun if you see me around you instead of your books.

And my name is math.

कला विभाग

2024- 25

कला ही जीवन

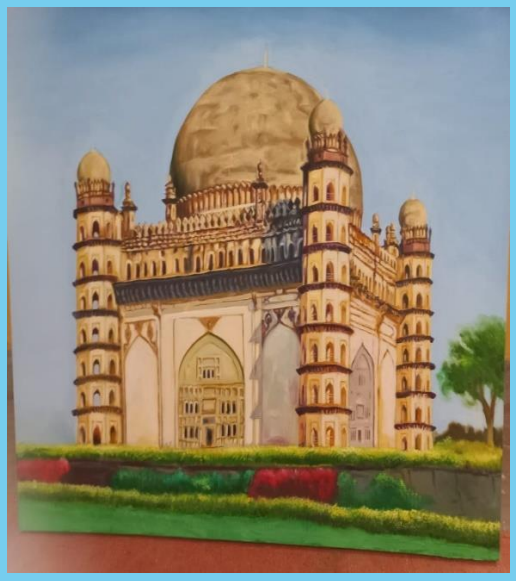

गोलगुंबज़

पट्टादाकाल

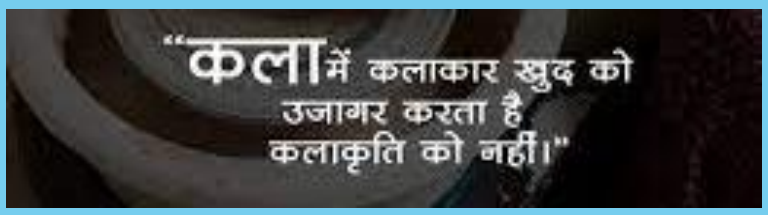

Vaishnavi
9 'B'

8 ‘B’

Ashmita
7 'B'

EDUCATIONAL TRIP

FOUNDATION DAY

REPUBLIC DAY CELEBRATIONS

MARTYR'S DAY

THINKING DAY CELEBRATIONS

WORLD EARTH DAY

विद्यालय प्रांगण के फूलों की तरह, हमारे जीवन में भी महकता रहें।